शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

Half Yearly

Vol-3, Issue-2
15 Jul-2012

डॉ० मंजू सिंह

महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली विश्व पुस्तक प्रकाशन बी.जी. ६/३०४ए, पश्चिम बिहार, नई दिल्ली-६३/ वितरक- अखिल भारतीय साहित्य कलामंच, मुरादाबाद, संस्करण-२०११

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

गीतकार मधुकर गौड़ व्यक्ति और साहित्य

शोधार्थी, डॉ० मंजू सिंह, शोध पर्यवेक्षक, डॉ० महेश दिवाकर

महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली विश्व पुस्तक प्रकाशन बी.जी. ६/३०४ए, पश्चिम बिहार, नई दिल्ली-६३/ वितरक- अखिल भारतीय साहित्य कलामंच, मुरादाबाद, संस्करण-२०११

कवियों के कृतित्व एवं व्यक्तित्व पर शोध के माध्यम से नये तथ्यों को सामने लाने में मदद मिलती है। शोधार्थी डॉ० मंजू सिंह द्वारा गीतकार मधुकर गौड़ पर किये गये शोध सामग्री को एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया गया है। यहाँ उसके बारे में संक्षेप में जानकारी दी गयी है।

श्रीमधुकर गौड हिन्दी साहित्य के एक ऐसे शलाका पुरुष हैं, जिनका व्यक्तित्व बहुआयामी है। साहित्य की अनेकशः विधाओं में उन्होंने सृजन किया है। वे कवि, लेखक, गीतिकार, दोहाकार, ग़ज़लकार, मुक्तककार, सम्पादक आदि के रूप में एक समर्थ साहित्यकार तो हैं ही, साथ ही वे एक मनस्वी साधक, गंभीर चिन्तक, निःस्वार्थ समाजसेवी, सच्चे राष्ट्र प्रेमी, मानवतावादी ओर उच्चकोटि के मानव भी हैं, किन्तु इन सबमें प्रमुख रूप से उनका व्यक्तित्त्व एक कवि का है ओर उनकी काव्य - यात्रा एक कवि से आरम्भ होकर निरन्तर काव्य के विविध सोपानों को आत्मसात करती हुए आगे बढ़ती रही है। इस काव्य-यात्रा में उन्हें कई पड़ावों से होकर गुजरना पड़ा हैं:-

1. श्री मधुकर गौड़ हिन्दी गीतिकाव्य के एक सशक्त हस्ताक्षर हैं। अपने समकालीन रचनाकारों में उनका महत्त्वपूर्ण स्थान है।
2. श्री मधुकर गौड़ का व्यक्तित्त्व एवं कृतित्व बहुआयामी है, जिसमें एक सच्चे और अच्छे मानव का व्यक्तित्त्व निहित है। उनके व्यक्तित्व में प्रमुखतः कवि, लेखक, सम्पादक का सर्जक व्यक्तित्व समाया है।
3. श्री मधुकर गौड़ ने हिन्दी गीत को सजाने, संवारने और पोषित करने का उल्लेखनीय कार्य मौलिक सर्जक, लेखक और सम्पादक - तीनों ही स्तरों पर किया है।
4. श्री मधुकर गौड़ काव्य-भाषा के प्रति अत्यन्त संवेदनशील और सजग हैं। उनकी काव्य-भाषा किसी एक ढर्रे पर नहीं भागती, उसका प्रयोग उन्होंने समकालीन युग बोध के अनुकूल किया है।
6. श्री मधुकर गौड़ की 'काव्यभाषा' में सहज संप्रेषणीयता, प्रतीकात्मकता, बिम्बात्मकता, भावाभिव्यंजकता, संवेदनशीलता, चित्रात्मकता, प्रवाहमयता, संगीतात्मकता, प्रभावोत्पादकता, ऋजुता, ओज, प्रसाद, माधुर्य, प्रांजलता, मौलिकता आदि के गुण विद्यमान हैं जिसको प्रभावी एवं सम्प्रेषणीय बनाने हेतु उन्होंनें बिंब, प्रतीक, उपमान, अलंकार, छंद आदि का सटीक विधान किया है। उनके पास 'शब्द-विधान' का अकूत भण्डार है।
7. श्री मधुकर गौड़ का 'अभिव्यंजना- शिल्प' आम पाठक के अनुकूल है। उनके 'आनुभूतिक आयाम' वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना से अनुप्राणित हैं और विश्व मानव के लिए कल्याणकारी पथ प्रशस्त करते हैं।
8. श्री मधुकर गौड़ का अभिव्यंजना-शिल्प अर्थात् 'भावपक्ष' और 'कलापक्ष' परस्पर एक दूसरे के अनुपूरक हैं अथवा यों कहें उनका काव्य 'भावपक्ष' और 'कलापक्ष' का अनूठा संगम है।
9. श्री मधुकर गौड़ सच्चे अर्थों में एक ऐसे कवि हैं, जिनका व्यक्तित्त्व एवं कृतित्व न केवल बहुआयामी है, अपितु एक समर्थ रचनाकार की भूमिका पर भी सफल उतरता है।
10. श्री मधुकर गौड़ की रचनाओं में अनूठी नवीनता है। सृजन की मौलिकता है, गंभीर चिन्तन है, अनूठा जीवन दर्शन है, कल्पना की प्रवणता है, यथार्थ का उन्मेष है, और शिल्प का सौष्ठव है, जो उन्हें अपने समकालीन रचनाकारों से पृथक स्थान प्रदान करता है।

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

Half Yearly

Vol-3, Issue-2
15 Jul-2012

डॉ० मंजू सिंह

महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली विश्व पुस्तक प्रकाशन बी.जी. ६/३०४ए, पश्चिम बिहार, नई दिल्ली-६३/ वितरक- अखिल भारतीय साहित्य कलामंच, मुरादाबाद, संस्करण-२०११

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

11. श्री मधुकर गौड़ की समग्र काव्य कृतियाँ हिन्दी साहित्य के लिए अनिर्वचनीय देन हैं। ये हिन्दी की अमूल्य धरोहर हैं।

सारत: श्री मधुकर गौड़ एक ऐसे असाधारण एवं महान रचनाकार हैं, जिनका व्यतित्त्व एवं कृतित्व समय की शिला पर अपनी पहचान अंकित करने में सफल रहा है। वास्तव में, विरले ही इस वसुंधरा पर अपना व्यक्तित्व एवं कृतित्व अंकित करने हेतु अवतरित होते हैं और श्री मधुकर गौड़ उन महान एवं असाधारण विभूतियों में से एक हैं।

बुद्ध चरित

शोधार्थी डॉ० महेश राम आर्य, शोध पर्यवेक्षक, डॉ० महेश दिवाकर

महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, विश्व पुस्तक प्रकाशन, ३०४-ए, बी.जी. -६ पश्चिम बिहार, नई दिल्ली-६३/वितरक- अखिल भारतीय साहित्य कलामंच, मुरादाबाद, संस्करण-२०११

दर्शन और साहित्य के स्तर पर जिन महापुरुषों ने मनुष्य को शांति और आनंद प्रदान करने का प्रयत्न किया है उनमें ***महात्मा बुद्ध*** का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। यूँ तो चिन्तन के धरातल पर प्रत्येक युग विभिन्न जातियों-संस्कृतियों के लोग पृथ्वी के प्रत्येक क्षेत्र में अपने विचारों से शांति और आनंद प्राप्ति के पथ निर्देशित करते रहे हैं किन्तु जैसी महान और व्यावहारिक सूझ महात्मा बुद्ध की रही है वैसी अन्य मनीषियों की कम ही रही है। समानता और अहिंसा का सिद्धान्त नये सिरे से व्याख्यायित करते हुए उन्होंने चिन्तन का जो महान पथ निर्देशित किया, वह सम्पूर्ण संसार में वंदनीय बना और न केवल उस युग में बल्कि आज भी बना हुआ है।

विश्व-इतिहास में महान चिन्तक के रूप में महात्मा बुद्ध की जो छवि निर्मित हुई उसने उन्हें साहित्य के क्षेत्र में महान नायक की गरिमा प्रदान की। वे विभिन्न भारतीय-अभारतीय भाषाओं में रचित साहित्य के महान नायक बने। संस्कृत में महाकवि अश्वघोष ने ***'बुद्धचरितम्'*** महाकाव्य रचकर उनके व्यक्तित्त्व और कृतित्त्व को महिमा मण्डित किया। अंग्रेजी भाषा की महाकाव्यकृति 'Light of Asia' में उनके चरित्र को अत्यंत उदात्त धरातल पर स्थित किया गया है। पालि, प्राकृत और अपभ्रंश भाषाओं के साहित्य महात्मा बुद्ध केजीवन एवं उपदेशों से विशेषत: समृद्ध हैं। इन भाषाओं में प्राप्त बुद्ध साहित्य से प्रभावित होकर हिन्दी भाषा में भी बुद्ध-चरित-काव्य की परम्परा पल्लवित हुई है।

हिन्दी में बुद्ध देव से सम्बंधित फुटकर पंक्तियाँ ***जयदेव*** कृत ***'रामचरितमानस'*** में मिलती हैं किन्तु उन पर केंद्रित प्रबंध काव्यों में परम्परा का सूत्रपात आधुनिक युग में द्विवेदी युगीन काव्य कृति ***'यशोधरा'*** से मिलता है। ***यशोधरा*** समीक्ष्य प्रबंध काव्य-परम्परा की प्रथम रचना है। यद्यपि इसमें यशोधरा को नायिका की पोठिका पर प्रतिष्ठित करते हुए कवि ने इस नायिका प्रधान कृति के रूप में प्रस्तुत किया है इस कारण यशोधरा में महात्मा बुद्ध मुख्य पात्र नहीं है। वे सहायक पात्र के रूप में अंकित हुए हैं तथापि यह रचना उनसे सम्बंधित होने के कारण ***'बुद्धकाव्य परम्परा'*** का प्रस्थान बिंदु मान्य किये जाने के योग्य है।

बुद्ध-चरित काव्य-परम्परा की हिन्दी रचनाओं में विविध काव्यरूपों की प्रस्तुति हुई है। इनमें महाकाव्यों में प्रथमत: प्रकाशित रचना है। इस काव्यकृति में कवि श्री अनूप शर्मा ने महाकाव्य-प्रणयन की संस्कृत-शैली का सफल प्रयोग किया है। यह रचना संस्कृत काव्य शास्त्र में निर्देशित महाकाव्य लक्षणों को ध्यान में रखकर रची गयी है और इस दृष्टि से बेजोड़ है। संस्कृत के वर्णिक छंदों में रचित इस महाकाव्य में द्विवेदी युगीन काव्य के समस्त गुण विद्यमान हैं। यह महाकाव्य इस युग की प्रतिनिधि कृति ***'प्रियप्रवास'*** के समान श्रेष्ठ एवं औदात्यपूर्ण है। प्रकाशन की दृष्टि से सिद्धार्थ प्रथम है, किन्तु रचना की दृष्टि रामचंद्र शुक्ल कृत ***'बुद्धचरित'*** प्रथम काव्य कृति सिद्ध होती है, क्योंकि कवि श्री अनूप शर्मा ने 'सिद्धार्थ' की भूमिका में इस तथ्य को संकेतित किया है कि 'सिद्धार्थ' की रचनात्मक पृष्ठभूमि आचाय शुक्ल कृत ***'बुद्धचरित'*** से भी प्राप्त रही है।

'मृगदाव' समीक्ष्य काव्य-परम्परा की द्वितीय रचना है जिसमें कवि ने महात्मा बुद्ध का व्यक्तित्त्व और कृतित्त्व द्विवेदी युगीन काव्य शैली में प्रस्तुत किया है। यह भी श्रेष्ठ महाकाव्य है, किन्तु इसका औदात्य एवं

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

Half Yearly

Vol-3, Issue-2
15 Jul-2012

डॉ० मंजू सिंह

महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली विश्व पुस्तक प्रकाशन बी.जी. ६/३०४ए, पश्चिम बिहार, नई दिल्ली-६३/ वितरक- अखिल भारतीय साहित्य कलामंच, मुरादाबाद, संस्करण-२०११

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

भाव सौंदर्य 'सिद्धार्थ' महाकाव्य से बहुत पीछे है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल कृत 'बुद्ध चरित' भी महाकाव्यों की कोटि में परिगणनीय है। अवधी भाषा की इस रचना में कवि ने भारतेन्दु युगीन काव्य-वैशिष्ट्य प्रस्तुत किया है। डॉ0 विनोद चन्द्र पाण्डेय कृत 'भगवान बुद्ध' तथा कथित महाकाव्य है। इसमें अभिधात्मकता की अधिकता के कारण मात्रिक छंदों की उपस्थिति के बावजूद काव्यात्मकता एवं लालित्य की न्यूनता है। अत: यह कृति औदात्य-हीन होने से विशेष महत्व के महाकाव्य से दूर है।

कवि ***श्री कृष्ण राय हृदयेश*** कृत ***'महाप्रकाश'*** में आधुनिक नयी कविता के महाकाव्यों जैसा औदात्य मिलता है। बिना किसी वर्णिक-मात्रिक छंद प्रयोग के प्रवाहनीय पद शैली में विचारों का स्पष्ट चित्रण इस काव्य कथा को नयी कविता की महत्त्वपूर्ण महाकाव्य रचना सिद्ध करता है। 'बुद्ध महापरिनिर्वाण' को भी कवि और उसके प्रशंसकों ने महाकाव्य कहा है किन्तु इसमें किसी भी स्तर पर महाकाव्य की गरिमा नहीं है। रसात्मकता प्राय: शून्य है और भाषा की प्रयोगगत त्रुटियाँ पग-पग पर विद्यमान हैं। महात्मा बुद्ध की प्रशंसा और वैदिक धर्म की खुली निन्दा से प्रेरित यह रचना आधुनिक युग के उस शिविर बद्ध दुर्भावना ग्रस्त मानसिकता से प्रेरित है जो बुद्ध विचारों के अतिरिक्त रचित समस्त वैदिक ग्रंथों और दर्शनों के निरसन-निंदन में ही अपनी रचनात्मकता की सार्थकता समझती है। कवि श्री दुलीचन्द्र वेदी कृत ***'बुद्ध चरित मानस'*** और डोरी लाल भास्कर कृत ***'बुद्ध किरन'*** भी ऐसी ही कृतियाँ हैं। इनमें बुद्धदेव की प्रशंसा के बहाने वैदिक धर्म और भारतीय राष्ट्रीय चिन्तन की छवि धमिल करने का पूरा-पूरा कूटयत्न किया गया है। इस प्रकार समीक्ष्य रचनाओं में महाकाव्यत्व की दृष्टि से कवि श्रेष्ठ ***अनूप शर्मा*** कृत 'सिद्धार्थ' रामानंद त्रिवदी शास्त्री कृत ***'मृगदाव'*** एवं श्री कृष्णराय हृदयेश कृत ***'महाप्रकाश'*** श्रेष्ठ महाकाव्य सिद्ध होते हैं। अन्य कृतियाँ महाकाव्य के निकष पर खरी नहीं उतरती हैं।

समीक्ष्य प्रबंधकाव्यों की परम्परा में खण्डकाव्यों की स्थिति महाकाव्यों की तुलना में अधिक सुदृढ़ है। डॉ0 जगदीश कृत ***'गोपागौतम'*** एवं ***'बोधिवृक्ष' मैथिलीशरण गुप्त*** कृत ***'यशोधरा' डॉ० राजन्द्र मिश्र*** कृत ***'गृह त्याग'*** उमेश शास्त्री कृत ***'अपराजिता गौतमी'*** और डॉ0 कृष्ण गोपाल मिश्र कृत 'युगसंदेश' उल्लेखनीय खण्डकाव्य हैं। 'यशोधरा' खण्डकाव्यों की श्रेणी में प्रथम रचना है। इसमें कवि ने यशोधरा की विरह भावना को विशेषत: अभिव्यक्त किया है। यशोधरा का चरित्रांकन आधुनिक भारतीय नारी के आदर्श का उदात्त निरूपण करता है। 'गोपा गौतम' में कवि जगदीश गुप्त ने सिद्धार्थ के गृहत्याग के कारणों पर विचार करते हुए सतर्क विवेचन प्रस्तुत किया है। उनके द्वारा प्रस्तुत तथ्य तर्क की कसौटी पर सत्य सिद्ध होते हैं। नारी की जागरूक मन: स्थिति उसकी तार्किकता और आत्मबल इस रचना में अत्यन्त प्रभावपूर्ण है। इस काव्यकृति की यशोधरा अबला नहीं है, सबला है। वह पुरुष की मूक अनुगामिनी नहीं, मुखर सहगामिनी है। इसलिए आधुनिक संदर्भों में यह रचना महत्त्वपूर्ण है।

SHODH SANCHAYAN